पुराने पेड़ की बातें

शरद जोशी

पुराने पेड़ की बातें

शरद जोशी

वाणी प्रकाशन

संस्करण : 2012 ISBN : 978-93-5000-615-3 मूल्य : 30.00

तभी एकाएक पेड़ से आवाज आई, "साहित्य समाज का दर्पण है।"

सब चोंक पड़े। हम होस्टल की मेस से खाना खाने के बाद टहलने निकले थे। चाँदनी रात। शहर की ओर जाने वाली सड़क विशेष अच्छी लगती थी, चाँदी की लकीर की तरह। हवा में पेड़ ऐसे झूमते जैसे कव्वाली की धुन पर तालियाँ बजा रहे हों। जिस विषय में बातें चल रही थीं वह खाना खाने के पूर्व छिड़ गया था—एक सद्य5 प्रकाशित उपन्यास को लेकर। बहस इतनी बढ़ गई कि साहनी चीखकर बोला, "आखिर साहित्य क्या है?"

तभी सड़क के किनारे के पुराने पेड़ ने कहा, "साहित्य समाज का दर्पण है।"

हमने चारों ओर देखा, उत्तर देने वाला कोई व्यक्ति नहीं। पेड़ के पीछे या पेड़ के ऊपर कोई नहीं था।

साहस करके गुप्ता ने कहा, "कौन है बे?"

कोई जवाब नहीं। लगता था किसी भुतहा कहानी की शुरुआत हो रही है।

"भूत है रे यहाँ!"

और तेजी से हम सब एक ओर भाग लिए कि पुलिया पर जा दम लिया।

लगभग आधा घंटा पेड़ के जादू पर सोचते रहे और फिर साहस कर वापस पेड़ के निकट आए। साहनी ने जोर से कहा, "आखिर साहित्य क्या है?"

और पेड़ से गंभीर वाणी सुनाई दी, "साहित्य समाज का दर्पण है।"

सब आश्चर्य से एक-दूसरे का मुँह देखने लगे।

"नई कविता क्या है?" वर्मा ने कहा।

"उँ...ऽऽ!" और पेड़ निरुत्तर हो गया।

कुछ देर हमने प्रतीक्षा की पर वह चुप रहा।

"काव्य क्या है?"

"वाक्यम् रसात्मकम् काव्यम्!" गंभीर उद्‍घोष हुआ।

जब कॉलेज में ये अनुभव सुनाए गए तो सब हँसे। किसी ने मूर्ख कहा, किसी ने डाँटा। जहाँ जाते स्वागत में ठहाके लगते कि ये आए पेड़ से आवाजें सुनने वाले!

विश्वविद्यालय प्रेस के अधीक्षक शर्माजी अपने को बड़ा साइंटिस्ट लगाते हैं। खबर उन तक भी पहुँच गई तो रात को वे होस्टल आए और कहने लगे, "बताइए कौन से पेड़ से आवाज आती है, मैं अभी भूत भगाता हूँ।"

हम उन्हें पेड़ तक ले गए।

प्रश्न किया, "काव्य क्या है?"

उत्तर मिला, "वाक्यम् रसात्मकम् काव्यम्।"

शर्माजी ने चिल्लाकर कहा, "कौन हो तुम बोलने वाले?"

कोई उत्तर नहीं आया।

"और कुछ प्रश्न पूछो भाई इससे।"

"प्रगतिवाद क्या है?"

"हिंदी की नवीनतम प्रवृत्ति।" आवाज आई।

पुराना खूसट पेड़ था। प्रगतिवाद को नवीनतम प्रवृत्ति कहने वाला!

"और प्रयोगवाद क्या है?"

"उँऽऽऽ..." पेड़ इतना कहकर चुप हो गया।

"छायावाद क्या है?"

"स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह।" उत्तर मिला।

शर्माजी हैरान खड़े इस अलौकिक वार्तालाप को सुन रहे थे। कहने लगे, "बिलकुल अजब बात है कि पेड़ बोलता है। मैं इस पेड़ को बरसों से जानता हूँ। यूनिवर्सिटी प्रेस जब नई इमारत में नहीं गया था और सामने के इस मकान में था, तब से।" फिर सोचते हुए कहने लगे, "बात तो कुछ विचित्र होगी पर ऐसा हो सकता है कि किसी रासायनिक प्रक्रिया के अन्तर्गत पेड़ विद्वान् हो गया हो।"

"क्या मतलब?"

"पहले इस पेड़ के पास एक गड्ढा था जिसमें हमारे प्रेस के रद्दी कागज, प्रूफ आदि डाल दिए जाते थे। कुछ थीसिसें और हिंदी साहित्य का इतिहास, जो उस समय छपवे थे इस पेड़ की जड़ में पड़े हैं और यह पेड़ विद्वान् हो गया।"

"पर इससे आवाज क्यों आती हैं?"

"पेट में किताब पड़ी हो तो मुँह से आवाज तो निकलेगी ही। विद्वान् है तो बोलेगा जरूर। चुप रहेगा!" गुप्ता ने समाधान किया।

पेड़ से एक प्रश्न और पूछा, "हिंदी की सर्वश्रेष्ठ कृति कौन-सी है?"

उत्तर मिला, "कामायनी।"

"सर्वश्रेष्ठ नाटककार कौन है?"

"भारतेंदु हरिश्चंद्र।"

"उनके बाद?"

"प्रसाद जी।"

"उनके बाद?"

"उँऽऽऽ...!" पेड़ चुप हो गया।

"प्रेमचंदजी के विषय में क्या जानते हैं?"

"वे ग्राम-जीवन के चतुर चितेरा थे।"

"सूर और तुलसी में कौन श्रेष्ठ है?"

"सूर-सूर, तुलसी सस उडुगन केसवदास। अब के कवि खद्योत सम जँह-तँह करत प्रकास।"

"डब्ल्यू. एच. ऑडेन का नाम सुना है?"

"उँऽऽऽ...!" कहकर पेड़ चुप हो गया।

अब यह निश्चित हो गया था कि क्लासिक ढंग के प्रश्न पूछिए क्लासिक उत्तर मिलेंगे। नई समस्या पर पूछेंगे, पेड़ चुप हो जाएगा। शर्माजी का विश्लेषण ठीक था। पेड़ की जड़ में पुरानी थीसिसें पड़ी हैं, जिनका रस पीकर पेड़ विद्वता-भरे उत्तर देता है।

कुछ दिनों बाद हम सबने यह निश्चय किया कि पेड़ को वैचारिक रूप से अप-टु-डेट किया जाए। कुछ नई पुस्तकें इकट्ठी की गईं। सभी नये साहित्य पर थीं। स्वयं शर्माजी ने पेड़ के आसपास एक-एक फुट गहरा गड्ढा किया और उसमें से किताबें रख दी गईं। थीसिस की पुस्तकों की खाद से पेड़ विद्वान् हो जाता है, यह बात सिद्ध हो जाती तो विज्ञान जगत् में शर्माजी का भी आठ-दस इंच स्थान हो जाता।

दूसरे रोज हमने आकर पेड़ से प्रश्न किए परंतु कोई उत्तर नहीं मिला। निश्चित था कि पेड़ उस

समय मनन कर रहा था और क्लासिक प्रश्नों के उत्तर देने के मूड में नहीं था। तीसरे-चौथे रोज भी यही रहा। हमें डर लगा कि पेड़ सदैव के लिए चुप न हो जाए।

"शर्माजी, नए साहित्य के संसर्ग में आकर पेड़ की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई है। वह मौन हो गया है। अच्छा यही है कि नई पुस्तकें वापस निकाल लें ताकि कम से कम उत्तर सुनने का चमत्कार तो नष्ट न हो।"

रात को शर्माजी के नेतृत्व में कुदाली लेकर पेड़ के पास जब पहुँचे तो देखकर सन्न रह गए कि पेड़ नीचे गिरा हुआ था। हमें दुख हुआ—जैसे हमने पेड़ की हत्या कर दी हो।

वर्मा ने कहा, "इस बूढ़े पेड़ के संपर्क में नया साहित्य नहीं आना चाहिए था। बेचारे से पचा नहीं और शॉक लग गया। हम सब उसके हत्यारे हैं।"

संगीत के प्रेमी पेड़ तो बहुत-से हैं जो गीत सुनकर विकसित होते हैं, साहित्य का प्रेमी वृक्ष एक यही था जो धराशायी हो गया।

हम सब वापस लौट आए—सिर झुकाए हुए।

माह-भर बाद जब हमारे हिन्दी के 'हैड ऑफ द डिपार्टमेंट', जो उन दिनों छुट्टी पर थे, वापस लौटे तो हमने सारा किस्सा सुनाया। शुरू में आश्चर्य हुआ पर बाद में आपने स्वीकार किया कि ऐसी दैविक शक्ति हो सकती है और वृक्ष भी ऐसे उत्तर दे सकता हैं

साहनी ने हँसकर कहा, "सर, बड़े क्लासिक उत्तर देता था वह पेड़। हमने पूछा—सर्वश्रेष्ठ नाटककार कौन है तो बोला—भारतेंदु हरिश्चंद्र। पूछा—काव्य क्या है तो कहता था—वाक्यम् रसात्मकम् काव्यम्। हमने पूछा—प्रगतिवाद क्या है तो कहने लगा—हिंदी की नवीनतम प्रवृत्ति। ठीक ही तो है। काव्य की सर्वश्रेष्ठ परिभाषा पंडितराज जगन्नाथ की ही है।"

"और प्रयोग...!" पर साहनी अधूरे में रुक गया।

"उँ...ऽऽऽ!" हेड ऑफ द डिपार्टमेंट ने कहा और फिर जाने क्या सोचते हुए चुप हो गए।

हम सब उनके कक्ष से बाहर चले आए। उस शाम हमने कसम खाई कि हेड ऑफ द डिपार्टमेंट से नए साहित्य पर कभी चर्चा नहीं करेंगे, उन्हें कोई पुस्तक नहीं देंगे, प्रश्न नहीं उठाएँगे। उनकी दीर्घायु की कामना करते हुए हमने यह निश्चय किया था।

एक पेड़ मर गया था, दूसरा पेड़ मरने नहीं देंगे।

मुझे आत्मबोध हुआ

इधर मुझे भी आत्मबोध हुआ। अगर जेब की हालत अच्छी हो, तो अक्सर आत्मबोध होता हैं आत्मा बोलती है, बाकायदा एक नेता की तरह भाषण देती है। उस दिन ऐसा ही हुआ और मैंने दोपहर तकिये से टिक कर लेटे हुए यह अनुभव किया कि आत्मा कोई स्टेटमेंट देना माँगती है।

आत्मा ने मुझसे सीधा सवाल किया, "तू कौन?" अब आप जानते हैं कि हमारे देश में आत्माएँ बड़ी हल्की भाषा बोलती हैं और जल्दी ही तू-तू, मैं-मैं पर उतर आती हैं। आत्मा यों भी पूछ सकती थी कि "आप श्रीमान कौन हैं?" पर नहीं, वह निहायत बदतमीजी से पूछेगी, "तू कौन है?" सामान्यतः इस

प्रकार के प्रश्न का बाजार में एक ही उत्तर मिलता है कि "मैं तेरा बाप!" पर चूँकि निजी मामला था और किसी को अपने कमरे में अपनी आत्मा द्वारा हुई बेइज्जती बुरी नहीं लगती, अतः मैंने अत्यंत गंभीरता से कहा, "मैं आपका मकान मालिक। जिस नवद्वारे के होटल में पड़ी आप ऐश कर रही हैं उसका मैनेजर!"

"ऐश कहाँ है मैनेजर साहब!" आत्मा ने कहा।

"और क्या चाहिए तुझे? अच्छा खा रही है, पी रही है, सरकारी क्वार्टर में सोफे पर तकिया डाले आराम कर रही है।" मैंने आत्मा को डांट लगाई।

"उँह।" आत्मा हंसी, "सरकारी क्वार्टर!" और फिर अशिष्टता से खी-खी करने लगी।

"आखिर तू क्या चाहती है बाई?" मैंने सवाल किया।

बाली, "हिल स्टेशन चलो।"

आत्मा ने मेरी कमजोरी जाहिर कर दी। आत्मा के इस प्रश्न ने मुझे गंभीर कर दिया। मैंने उत्तर दिया, "यहीं ठीक है। क्या धरा है हिल स्टेशन में! मुझे तो यह जगह अच्छी लगती है।"

"तेरे पास पैसे नहीं हैं, दम नहीं है।" उसने कहा।

मैं चुप रहा, काफी देर चुप रहा।

"ऐ शरीर, तुझे ज्यादा कमाना चाहिए। अगर जरूरी हो तो भ्रष्टाचार भी करना चाहिए। इससे पैसा आता है। अगर पैसा हो, पंगु आदमी भी पहाड़ चढ़ सकता है, मूक व्यक्ति का भाषण भी समाचार पत्र में निकल सकता है। उठ और भ्रष्टाचार कर। ऐश सफलता का पर्यायवाची है। वही जीवन का परम लक्ष्य है। साधना, श्रम, प्रतिभा, यश आदि सारा कच्चा माल अंततोगत्वा मुद्रा में परिवर्तित होता है और मुद्राओं से ही ऐश का राजमार्ग बना है।"

मैंने अनुभव किया कि अब आत्मा एक लंबा वक्तव्य देगी, जैसी कि उसकी आदत है।

‘‘हे मनुष्य, जीवन तो एक प्लेटफार्म है। एक रेल तुझे इस जंक्शन पर छोड़ गई है, दूसरी रेल ले जाएगी। उठ और इस प्लेटफार्म पर उपलब्ध समस्त कन्या रत्नों को घूर। सारे खोमचे रोक और खाता-पीता रह। जब तक यमराज का काला इंजन धड़धड़ाता तेरे जीवन में न घुसे, तू एक क्षण न गँवा। ऐ मूर्ख, अपनी पेटी-बिस्तर से चिपक कर जो बैठे रहे, वे सभी प्लेटफार्म नहीं घूम सके। अभी पटरी साफ है, अभी सिगनल नहीं झुका, वक्त न गँवा और कुछ कर। जब प्राणों का गार्ड सीटी मार देगा, तब तू असहाय खिड़की से हाथ हिलाते रहने के अलावा कुछ नहीं कर सकेगा।’’

आत्मा की बात मेरी समझ में आ रही थी। उसका साफ इशारा था कि मैं यह सरकारी बाबूगिरी छोड़कर बिजनेस में घुस जाऊँ और वह सब करूँ, जो इस भारतभूमि में संभव है।

‘‘डियर आत्मा, मैं सिर्फ एक बाबू ही नहीं, लेखक भी तो हूँ। हिंदी का एक अदना, हंसी-मजाक लिखने वाला लेखक! मैं बुरा फंसा हूँ आत्मा, मैं कैसे मुक्ति पा सकता हूँ?’’

‘‘हास्य-व्यंग्य छोड़, गंभीर बन। भारत में गंभीर रहना एक पुराना व्यवसाय है। सारे दांत ओंठों में

स्टॉक कर ले और अपना भाव बढ़ा। यह क्या छोटी-छोटी रचनाएँ लिखना है! मूर्ख, मोटा उपन्यास लिख, जिसमें कम से कम तीन लड़कियों का नजारा हो और जिस पर फिल्म बन सके।’’

मैं उपन्यास की विधा के बारे में सोचने लगा।

आत्मा बोलती रही, ‘‘हर मनुष्य के अंतर में एक कारखाना है। स्विच दबा और मशीन चालू कर। भूल मत कि तेरे अंदर एक प्राइवेट सेक्टर है, जो महज बनाने और बेचने पर विश्वास करता है। तुझे लायसेंस मिल गया है, तेरी साख है, तेरा विज्ञापन है, तू जो करेगा, वही बिकेगा।’’

‘‘मैं तो कर रहा हूँ।’’

‘‘यह कुछ नहीं है कमबख्त। एक बड़े कारखाने के सामने तेरे प्रयास एक पनचक्की से ज्यादा नहीं। याद रख, लेखक और प्रकाशक के सतत कॉलोबरेशन का नाम ही साहित्य का विकास है। उठ और लाभ और शुभ के इस बाजार में धंस जा।’’

आत्मा का बर्मा पथरीली सतहें तोड़ते हुए अब उस गहराई तक जा पहुँचा था, जहाँ से घासलेट का तेल बाहर आता है। सोता फूट निकला था और कीचड़ और तेल में अपने बदन को लपेटे हुए मैं आश्चर्य से मुस्करा रहा था। मैं आत्मा को दाद देने लगा।

"आइसक्रीम खाएगी?" मैंने पूछा।

"हूँ।" आत्मा ने जवाब दिया।

काया महल के एक द्वार पर जीभ लपलपाने लगी। मैंने आइसक्रीम वाले को आवाज दी और आइसक्रीम चूसने लगा। आत्मा को ठंडक मिली और मीठा स्वाद भी।

ऋषि-मुनि कहते थे, आत्मा के बताये मार्ग पर चल। बेचारे ठीक कहते थे और अनुभव के बाद कहते थे। वे आत्मा के बताये मार्ग पर नहीं चले, तो उनकी काया को बड़ा कष्ट भुगतना पड़ा। अरे ईश्वर की पूजा ही करनी है, तो उस मंदिर के पुजारी बनो, जहाँ चढ़ोतरी ज्यादा आती हो, भक्त-भक्तिनों की भीड़ हो। कुछ भी कहो, आत्मा बढ़िया सलाह देती है।

तकिया नरम था और पंखा तेज। आत्मा आराम करने लगी। अनहद नाद का कार्यक्रम समाप्त घोषित कर अब सांसों के संगीतमय फिलर बजने लगे। गरम दोपहर से कुश्ती लड़ते पंखे की सुरक्षात्मक शरण में शरीर संतुष्ट था। फिर असंतुष्ट आत्मा भी अपने को अभिव्यक्त करने के बाद वास्तविकता से एडजस्ट करने में लग गई। आत्मबोध की एक दोपहरी सुराही के ठंडे पानी के सहारे बीती।

●●●

मुद्रक : शुभम ऑफसेट, शाहदरा, दिल्ली-32